© UNIVERSAL RESEARCH REPORTS | REFEREED | PEER REVIEWED
ISSN : 2348 - 5612 | Volume : 05 , Issue : 01 | January – March 2018

हरिवंशराय बच्चन की कविता 'अँधेरे का दीपक' में आस्थावादी और आशावादी विचारों की विवेचना

डॉ सुमन चहल

ISSN : 2348-5612 © URR
9 770234 856124

प्रकृति में विनाश और निर्माण निरंतर चलता रहता है, इसलिए इन परिवर्तनों से घबराने की आवश्यकता नहीं है। अँधेरी रात में दीया जलाने की मनाही नहीं है। कवि कहते हैं कि मनुष्य कल्पना के सहारे अपने सुंदर भवन का निर्माण करता है। अपनी भावना के सहारे उसे विस्तारित करता है। अपने स्वप्न-करों से उसे सजाता-सँवारता है। अपने सुंदर भवन को स्वर्ग के दुर्लभ व अनुपम रंगों से सजाता है। यदि वह कमनीय मंदिर ढह जाए तो दोबारा ईंट, पत्थर, कंकड़ आदि जोड़कर शांति की कुटिया बनाने की मनाही तो नहीं है। कहने का तात्पर्य यह है कि कल्पनाओं का संसार छिन्न-भिन्न हो जाने पर, सपने टूट जाने पर इनसान को निराश या हताश होने की बजाय आशावादी बनना चाहिए।

कवि ने मानव में आशावादी स्वर का संचार करते हुए कहा है कि यदि नीले आसमान के गहरे रंग का अत्यंत बहुमूल्य और सुंदर मधुपात्र जिसमें ऊषा की किरण समान लालिमा जैसी लाल मदिरा नव-घन में चमकने वाली बिजली के समान छलका करती थी। यदि वह मधुपात्र टूट जाए तो निराश होने की क्या जरूरत है, बल्कि अपनी हथेली की अंजुलि बनाकर प्यास बुझाने की मनाही तो नहीं है। अर्थात् विनाश प्रकृति का शाश्वत नियम है और जो बना है, वह नष्ट भी होगा।

"अँधेरे का दीपक" कविता कवि ने अपनी पत्नी श्यामा की मृत्यु के दुख से उबरने के पश्चात लिखा था जिसमें कवि ने अपनी जीवन-संगिनी के साथ बिताए आनंद और ल्लास के पलों का वर्णन किया है। कवि कहते हैं कि जब उनकी पत्नी जीवित थी उस समय कोई चिन्ता नहीं थी। दिन रंग-बिरंगे पलों में व्यतीत हो रहे थे। कालिमा अर्थात् निराशा का भाव जीवन को छू भी नहीं गया था। दुखों की छाया भी पलकों पर कभी दिखाई नहीं दी। उनकी निर्मल हँसी को देखकर बादल भी शर्मा जाते थे अर्थात् जीवन में दुख के बादल कभी नहीं छाएलेकिन उनकी पत्नी के देहांत के साथ-साथ ही कवि के जीवन की सारी खुशियाँ भी चली गईं। समय गतिशील है। दुख के क्षणों में यदि मुस्कराया जाए तो देख झेलना बहुत आसान हो जाता है।

है अँधेरी रात पर दीया जलाना कब मना है !
क्या हवाएँ थीं कि उजड़ा प्यार का वह आशियाना,
कुछ न आया काम तेरा शोर करना, गुल मचाना
नाश की उन शक्तियों के साथ चलता ज़ोर किसका,
किंतु ऐ निर्माण के प्रतिनिधि, तुझे होगा बताना !!
जो बसे हैं वे उजड़ते हैं प्रकृति के जड़ नियम से
पर किसी उजड़े हुए को फिर बसाना कब मना है !!
है अँधेरी रात पर दीवा जलाना कब मना है .....

हरिवंशराय बच्चन ने "अँधेरे का दीपक" के माध्यम से मानव-जीवन में आशावादी एवं सकारात्मक दृष्टिकोण के महत्त्व को प्रतिपादित करने के कोशिश की है। कवि के अनुसार मानव-जीवन में सुख-दुख आते-जाते रहते हैं। किसी दुख से घबराकर पूर्णत: निराश होकर बैठ

जाना अनुचित है। प्रकृति हमें आशावाद का संदेश देती है। हर अँधेरी रात कालिमा से भरी होती है लेकिन इनसान के पास दीया जलाकर रोशनी फैलाने का अधिकार है, अर्थात् जीवन के दुख से बाहर आकर सुख प्राप्त करने की आशा सदैव बनी रहती है।

प्रकृति के सभी निर्जीव और सजीव नाशवान हैं। सृजन, चिन्तन और संहार प्रकृति का शाश्वत नियम है। प्रकृति के नियम अपरिवर्तनशील हैं। वे हमारे अनुसार संचालित नहीं होते बल्कि हमें उनके साथ समायोजन करना पड़ता है। कवि ने 'अँधेरे का दीपक' कविता में आस्थावादी और आशावादी स्वर का संचार किया है। कवि ने मानव जीवन में सुख और दुख को रेखांकित करते हुए कहा है कि जब सुख के दिन नहीं रहे तो दुख के दिन भी नहीं रहेंगे। अत: मानव को दुख, पीड़ा, कष्ट, पराजय से निराश न होकर उसे स्वीकार करना चाहिए और उसके विरुद्ध संघर्ष करते हुए सुख की ओर बढ़ते रहना चाहिए।
कवि के शब्दों में -

है अँधेरी रात, पर दीवा जलाना कब मना है?

मानव अपनी अतुलनीय कल्पना से सुंदर कमनीय भवन रूपी मंदिर का निर्माण करता है। उसे अपनी भावनाओं से सजाता है। अपनी रुचि के अनुसार उसे सजाता-सँवारता है। उसमें प्रेम और अपनापन का रंग भरता है पर एक दिन प्रकृति का कहर टूटता है और वह आलीशान महल धराशायी हो जाता है। पर कवि निराशा के अँधकार में नहीं डूबना चाहता क्योंकि विध्वंस प्रकृति का नियम है। मनुष्य हर विनाश के बाद फिर से निर्माण करने की हिम्मत रखता है। कवि के शब्दों में -

ढह गया वह तो जुटाकर, ईंट, पत्थर, कंकड़ों को,

एक अपनी शांति की कुटिया बनाना कब मना है?

कवि कहते हैं कि जब आप अपने प्रिय साथी से बिछुड़ जाते हैं तब मन को बहुत पीड़ा होती है। उस अलगाव के दर्द को सह पाना बेहद मुश्किल होता है लेकिन मरने वाले के साथ मरा तो नहीं जाता। रिश्तों के खत्म हो जाने पर जीवन तो खत्म नहीं हो जाता। ऐसे समय में यदि मन दूसरा मीत खोजकर उससे अपना मन लगा ले, तो इसमें मनाही नहीं है। नीलम के बने गिलास में ,प्रथम उषा रश्मि के समान लाल मदिरा भरी है। मधुपात्र के टूट जाने पर उसका शोक मनाने से अच्छा है कि अपने दोनों हाथों को जोड़कर अंजलि का निमर्ल स्रोत बनाई जए और उसमें उस मदिरा को भरकर पी लिया जाए। कवि के शब्दों में -

वह अगर टूटा, मिलाकर हाथ दोनों की हथेली,

एक निर्मल स्रोत से तृष्णा बुझाना कब मना है?

हरिवंशराय 'बच्चन' की मानवतावादी आस्था मनुष्य की स्वतंत्रता और अस्मिता को सर्वोपरि मानते हुए, समाज-कल्याण का निरंतर प्रयास करता है। उन्होंने अपनी कविता के माध्यम से मानव-जीवन में आशा का संचार किया है ताकि मानव-जीवन की पीड़ा को कम किया जा सके। हिन्दी के प्रख्यात कवि अज्ञेय ने लिखा है कि दुख सबको माँजता है। कहने का तात्पर्य यह है कि जीवन में बिना दुख के सुख की आवश्यकता को जाना ही नहीं जा सकता। जब व्यक्ति के जीवन में दुख, पीड़ा, मुश्किल, हताशा बढ़ती है तब उसके व्यक्तित्व का वास्तविक आँकलन किया जा सकता है।

हमें सुख और दुख दोनों में ही समान भाव रखने चाहिए। दुख में मुस्कराने से दुख कम हो जाता है। जीना आसान हो जाता है। दुख के आगमन पर धैर्य बनाए रखना और जीवन में सुख की निरन्तर खोज करते रहना ही प्रस्तुत कविता का मूल उद्देश्य है जिसे कवि हरिवंशराय बच्चन ने सफलतापूर्वक अभिव्यक्त किया है।

कवि की कविता का मूल विषय है - प्रेम। कवि ने अपने प्रियतम वियोग के दुख को व्यापक मानवीय संवेदना से जोड़ दिया है। कवि का मानना है कि जीवन में दुख की एक बड़ी भूमिका है। दुख ही मनुष्य के जीवन में निखार लाता है। अत: हमें उससे घबराना नहीं चाहिए । कवि कहते हैं कि जिस प्रकार आँधी चलने से घर उजड़ जाते हैं इसी प्रकार कुछ ऐसी हवाएँ चली कि प्यार का बसा बसाया घर उजड़ गया। उस समय शोर मचाना या रोना कुछ भी काम नहीं देता। प्रकृति के विनाश के सामने मानव एकदम बेबस हो जाता है। कवि कहते हैं कि विध्वंस की शक्ति ने जिसे उजाड़ दिया उसे फिर से बसाना क्या मना है। कवि के शब्दों में -

जो बसे हैं वे उजड़ते हैं, प्रकृति के जड़ नियम से,

पर किसी उजड़े हुए को, फिर बसाना कब मना है?

निष्कर्ष में हम कह सकते हैं कि प्रकृति में सृजन और संहार का नियम चलता रहता है। इन परिवर्तनों से बिना घबराए मुस्कराना कब मना है। जीवन की हर परिस्थिति में आस्थावान बने रहना मानव-सफलता की सबसे बड़ी कुंजी है।

सन्दर्भ :

1. अँधेरे का दीपक , हरिवंशराय 'बच्चन'
2. हिंदी पटल – हिन्दी की उत्कृष्ट रचनाएँ